No. of Printed Pages : 3

BSKE–141

स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

बी.एस.के.ई-141 : आयुर्वेद के मूल आधार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में* ***दो*** *खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड से प्रश्न के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक अंकित हैं।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5×15=75

   (क) आयुर्वेद के प्रयोजन, लक्षण और महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।

   (ख) शरद ऋतु के ग्रहणीय और अग्रहणीय तत्वों की समीक्षा कीजिए।

(ग) भृगुवल्ली क्या है? उसमें प्रतिपादित नैतिकता का वर्णन कीजिए।

(घ) चरक संहिता (सूत्रस्थानम्) का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ङ) आयुर्वेद के अनुसार 'निदान पञ्चक' की व्याख्या कीजिए।

(च) आयुर्वेद की धन्वन्तरि और पुनर्वसु पद्धति की व्याख्या कीजिए।

खण्ड—ख

2. (अ) निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $3\times5=15$

(क) आयुर्वेद में वात, पित्त और कफ

(ख) उपनिषदों का महत्व

(ग) वर्षा ऋतु में आहार

(घ) आयुर्वेद के षड्रस

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्वयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं

प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। सैषा भार्गवी वारूणी विद्या परमे व्योमेन प्रतिष्ठिता। स य एवं वेद प्रतितिष्ठति।

अथवा

विज्ञानं बह्मेति व्यजानात्। विज्ञानद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवन्ति। विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति।

× × × × ×